१०. भारति, जय, विजयकरे!

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए।

1. कविता 'भारति, जय, विजय करे!' के रचयिता कौन हैं?

   (क) महादेवी वर्मा ☐ (ग) सुमित्रानंदन पंत ☐

   (ख) सूर्यकांत त्रिपाठी ☐ (घ) जयशंकर प्रसाद ☐

2. 'भारति, जय, विजयकरे!' कविता किस भावना से ओत-प्रोत है?

   (क) वैराग्य भावना से ☐ (ग) श्रृंगार भावना से ☐

   (ख) करुणा भावना से ☐ (घ) देशप्रेम की भावना से ☐

3. "भारति" शब्द से यहाँ किसका बोध होता है?

   (क) भारतमाता ☐ (ग) गंगा ☐

   (ख) सरस्वती ☐ (घ) पृथ्वी ☐

4. 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' में कवि ने किसे भारत का मुकुट कहा है?

   (क) समुद्र ☐ (ग) हिमालय पर्वत ☐

   (ख) गंगा ☐ (घ) वन ☐

5. हिमालयी मुकुट को शुभ्र अर्थात् सफेद कौन बनाता है?

   (क) सफेद संगमरमर ☐ (ग) सफेद बादल ☐

   (ख) बर्फ और पाला ☐ (घ) सूरज की रोशनी ☐

6. कविता में भारत की दिशाओं में किसका गूँजना बताया गया है?

   (क) संगीत ☐ (ग) युद्ध-घोष ☐

   (ख) मंत्रों का जाप ☐ (घ) ओंकार ☐

7. 'धवल धार हार गले' पंक्ति में भारत माता के गले में धवल (सफेद) धार के समान क्या सुशोभित है?

   (क) हिमालय की बर्फ ☐ (ग) मोतियों का हार ☐

   (ख) गंगा का पवित्र जल ☐ (घ) सफेद बादल ☐

8. 'अंतिम संदेश' से क्या तात्पर्य है?

   (क) अधिक यात्रा करना ☐ (ग) देशभक्ति और कर्तव्य ☐

   (ख) पेड़ लगाना ☐ (घ) संस्कृत सीखना ☐

9. कविता के हिसाब से राष्ट्र के पदतल यानी एकदम पैरों में कौनसी जगह स्थित है?

(क) गुजरात ☐ (ग) लंका ☐

(ख) हिमालय ☐ (घ) बंगाल ☐

10. राष्ट्र के चरणों में इस 100 पंखुड़ियों वाले कमल का इल्यूजन (आभास) असल में किससे बनता है?

(क) समुद्र की लहरें ☐ (ग) जंगल के पत्ते ☐

(ख) रेत के टीले ☐ (घ) बर्फबारी ☐

(ख) स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' के सही अर्थ से मिलाइए।

स्तंभ 'अ' (शब्द)	स्तंभ 'ब' (सही अर्थ)
(1) वसन	(i) ओस की बूँदें या पाला
(2) शस्य	(ii) वस्त्र या कपड़े
(3) शुचि	(iii) हरी-भरी फसल
(4) तुषार	(iv) पवित्र या शुद्ध

(ग) निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रत्येक कथन के सामने 'सत्य' या 'असत्य' लिखिए।

1. कविता में भारतमाता को एक साधारण स्त्री के रूप में दिखाया गया है। – _____
2. कविता में भारत माता के वस्त्रों (वसन) की तुलना बादलों और बारिश से की गई है। – _____
3. समुद्र का पानी भारतमाता के चरणों को धोता है। – _____
4. भारतमाता के हाथों में कमल के रूप में समुद्र की लहरों की कल्पना की गई है। – _____
5. कविता में गंगा को भारतमाता के गले का हार बताया गया है। – _____
6. कविता में भारत की संस्कृति को महत्व नहीं दिया गया है। – _____
7. कविता में भारत को कमजोर और निर्धन बताया गया है। – _____
8. कविता की भाषा-शैली अत्यंत सरल, सामान्य और बोलचाल की हिंदी है। – _____
9. 'प्रणव ओंकार' की गूँज भारत की महान आध्यात्मिक शक्ति और चेतना का प्रतीक है। – _____
10. कविता के अनुसार भारतमाता के आँचल में प्राकृतिक रूप से सुंदर फूल सजे हुए हैं। – _____

(घ) 'गंगा ज्योतिर्जल-कण धवल धार हार गले' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

_____

_____

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में (लगभग 25-30 शब्दों में) लिखिए।

1. कवि ने भारत माता के हाथों में क्या-क्या धारण करने की बात कही है और वे किसके प्रतीक हैं?

   उत्तर: _____

   _____

2. “कनक-शस्य-कमलधरे” से भारत की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

   उत्तर: _____

   _____

3. समुद्र की लहरों का क्या कार्य बताया गया है?

   उत्तर: _____

   _____

4. कविता में किन-किन प्राकृतिक उपादानों (चीजों) का वर्णन किया गया है?

   उत्तर: _____

   _____

5. भारत माता का मुकुट क्या है और वह कैसा दिखाई देता है?

   उत्तर: _____

   _____

6. 'प्राण प्रणव ओंकार' से कवि का क्या तात्पर्य है?

   उत्तर: _____

   _____

7. राष्ट्र के वसन किसे कहा गया है?

   उत्तर: _____

   _____

8. कवि ने भारत की प्राकृतिक सुंदरता को कैसे प्रस्तुत किया है?

   उत्तर: _____

   _____

9. निराला जी ने भारत माता के मुकुट का वर्णन किस प्रकार किया है?

   उत्तर: _____

   _____

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

10. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर: _____

_____

(च) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से (लगभग 80-100 शब्दों में) लिखिए।

1. कवि ने भारतमाता का स्वरूप किस प्रकार प्रस्तुत किया है?

उत्तर: _____

_____

_____

_____

_____

2. कविता में भारत की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन कैसे किया गया है?

उत्तर: _____

_____

_____

_____

_____

3. “प्राण प्रणव ओंकार” और “शतमुख-शतरव” से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: _____

_____

_____

_____

_____

4. कविता में प्रयुक्त प्रतीकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: _____

_____

_____

_____

_____

(च) नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो समान अर्थ वाले शब्द लिखिए।

1. कनक – _____ _____
2. शस्य – _____ _____
3. शुचि – _____ _____
4. उर्मी – _____ _____
5. हिम – _____ _____
6. सुमन – _____ _____

(छ) नीचे दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए।

1. करे = _____
2. पदतल = _____
3. वसन = _____
4. तुषार = _____

(ज) काव्य में प्रयुक्त निम्नलिखित पदों का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए।

1. कनक-शस्य – विग्रह: _____ समास का नाम: _____
2. चरण-युगल – विग्रह: _____ समास का नाम: _____
3. हिम-तुषार – विग्रह: _____ समास का नाम: _____
4. तरु-तृण – विग्रह: _____ समास का नाम: _____
5. शतमुख – विग्रह: _____ समास का नाम: _____

(झ) विशेषण और विशेष्य पहचानकर अलग लिखिए।

1. शुभ्र हिम – विशेषण: _____, विशेष्य: _____
2. धवल धार – विशेषण: _____, विशेष्य: _____

(ञ) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त मुख्य अलंकार की पहचान कीजिए।

1. "कनक-शस्य-कमलधरे" – अलंकार: _____
2. "गर्जितोर्मि सागर-जल" – अलंकार: _____
3. "धोता शुचि चरण युगल" – अलंकार: _____
4. "प्राण प्रणव ओंकार" – अलंकार: _____

(ट) निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

1. ज्योतिर्जल = _____ + _____
2. चरणयुगल = _____ + _____
3. शतमुख = _____ + _____
4. गर्जितोर्मि = _____ + _____

Answer

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
2. (घ) देशप्रेम की भावना से
3. (क) भारतमाता
4. (ग) हिमालय पर्वत
5. (ख) बर्फ और पाला
6. (घ) ओंकार
7. (ख) गंगा का पवित्र जल
8. (ग) देशभक्ति और कर्तव्य
9. (ग) लंका
10. (क) समुद्र की लहरें

(ख) मिलान कीजिए

1. वसन → (ii) वस्त्र या कपड़े
2. शस्य → (iii) हरी-भरी फसल
3. शुचि → (iv) पवित्र या शुद्ध
4. तुषार → (i) ओस की बूँदें या पाला

(ग) सत्य/असत्य

1. असत्य	2. असत्य	3. सत्य	4. असत्य	5. सत्य
6. असत्य	7. असत्य	8. असत्य	9. सत्य	10. सत्य

(घ) भावार्थ

- गंगा की उज्ज्वल और पवित्र जलधारा भारतमाता के गले में हार के समान शोभा दे रही है। यह भारत की पवित्रता, सुंदरता और सांस्कृतिक महानता का प्रतीक है।

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में (लगभग 25-30 शब्दों में) लिखिए।

1. कवि ने भारत माता के हाथों में 'कनक-शस्य' (सोने जैसी हरी-भरी फसलें) और 'कमल' धारण करने की बात कही है। ये दोनों देश की प्रचुर धन-धान्य, संपन्नता और सांस्कृतिक पवित्रता के प्रतीक हैं।
2. इस पद से भारत की कृषि-समृद्धि और आध्यात्मिक श्रेष्ठता प्रकट होती है। यह दर्शाता है कि हमारे देश की धरती सोने जैसी फसलें उगलती है और यहाँ सर्वत्र सुख-शांति तथा पवित्रता का वास है।
3. कविता में समुद्र की गरजती हुई लहरों को भारत माता के पावन चरणों को निरंतर धोते (पखारते) हुए और अपनी गंभीर गूँज से माता की निरंतर स्तुति व वंदना करते हुए दिखाया गया है।
4. कविता में बर्फ से ढके हिमालय पर्वत, पवित्र गंगा नदी, लहलहाती हुई फसलों, वृक्षों, घास, जंगली लताओं, रंग-बिरंगे फूलों और विशाल गरजते हुए समुद्र जैसे प्राकृतिक उपादानों का सुंदर वर्णन हुआ है।
5. भारत के उत्तर में स्थित विशाल हिमालय पर्वत ही भारत माता का मुकुट है। इस पर्वतराज पर जमी हुई सफेद बर्फ और पाले (हिम-तुषार) के कारण यह मुकुट चांदी की तरह धवल और चमकीला दिखाई देता है।
6. इससे कवि का तात्पर्य भारत की महान सनातन आध्यात्मिक चेतना से है। भारत माता के प्राणों में 'ओंकार' (ॐ) की मूल ध्वनि बसी है, जो हमारे वेदों, ज्ञान और अटूट सांस्कृतिक गौरव का आधार है।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

7. राष्ट्र के वस्त्र (वसन) यहाँ के सुंदर हरे-भरे पेड़-पौधों, मखमली घास, घने जंगलों और चारों ओर फैली प्राकृतिक लताओं (तरु-तृण-वन-लता) को कहा गया है, जो धरती का श्रृंगार करते हैं।
8. कवि ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का मानवीकरण करके उसे सजीव प्रस्तुत किया है। उन्होंने पर्वतों को मुकुट, गंगा को गले का हार और हरी-भरी वनस्पतियों को भारत माता के सुंदर वस्त्रों के रूप में दिखाया है।
9. निराला जी ने उत्तर दिशा में प्रहरी बनकर खड़े हिमालय को माता का मुकुट कहा है। इस पर पड़ने वाली ओस और बर्फ की सफेद चादर इसे अत्यंत पूजनीय, धवल, मुकुट जैसी गरिमा और भव्यता प्रदान करती है।
10. इस कविता का मुख्य संदेश विद्यार्थियों में अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध देशभक्ति, राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाना तथा भारत के अनूठे प्राकृतिक वैभव और महान आध्यात्मिक संस्कृति के प्रति गौरव की भावना पैदा करना है।

(च) दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर (80-100 शब्द)

1. कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने भारतमाता को एक दिव्य, ओजस्वी और पूजनीय देवी के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने भारत की भौगोलिक और प्राकृतिक भव्यता को मानवीय रूप देकर अत्यंत जीवंत बना दिया है। इस भव्य स्वरूप में उत्तर दिशा में स्थित हिमालय पर्वत माता के सिर का चमकीला मुकुट है, तो दक्षिण में स्थित समुद्र की लहरें उनके पवित्र चरणों को पखारती हैं। लंका उनके पैरों के पास एक खिले हुए कमल की तरह सुशोभित है। गंगा की उज्ज्वल धारा उनके गले का हार है और यहाँ के समस्त पेड़-पौधों, वन व लताएँ उनके वस्त्र हैं। माता के हाथों में सुनहरी फसलें और कमल हैं, तथा उनके प्राणों में पावन ॐ (ओंकार) का नाद गूँजता है। इस प्रकार निराला जी ने भारतमाता को सौंदर्य, संपन्नता और असीम आध्यात्मिक शक्ति से युक्त चित्रित किया है।
2. कविता में भारत के अनुपम प्राकृतिक वैभव का अत्यंत सजीव, काव्यात्मक और प्रभावशाली चित्रण किया गया है। कवि ने देश के कोने-कोने में बिखरी सुंदरता को समेटते हुए बताया है कि भारत के खेत 'कनक-शस्य' अर्थात् सोने के समान मूल्यवान फसलों से लदे हैं। यहाँ के वृक्ष, तिनके, जंगल और बेल-बूटे मिलकर माता के वस्त्र बनते हैं, जिनमें खिले हुए फूल सितारों की तरह जड़े हैं। हिमालय की बर्फीली चोटियाँ मुकुट के रूप में चमकती हैं और गंगा नदी की धवल धार मोतियों के हार की तरह बहती है। समुद्र का विशाल जल अपनी गरजती लहरों से देश की सीमाओं की आरती उतारता है। इन सभी उपादानों के माध्यम से कवि ने यह सिद्ध किया है कि भारत प्रकृति की अनुपम क्रीड़ास्थली है और इसका बाह्य सौंदर्य अद्भुत है।
3. "प्राण प्रणव ओंकार" से कवि का अभिप्राय यह है कि भारतवर्ष की मूल आत्मा और जीवन-शक्ति इसके उच्च आध्यात्मिक मूल्यों में समाहित है। 'प्रणव ओंकार' (ॐ) सृष्टि की आदि-ध्वनि है, जो भारत के अंतःकरण और यहाँ की वायु में रची-बसी है। यह भारत की ज्ञान-परंपरा को दर्शाती है। दूसरी ओर, "शतमुख-शतरव-मुखरे" का अभिप्राय भारत की 'विविधता में एकता' से है। 'शतमुख' का अर्थ है सौ-सौ (अनेक) मुख और 'शतरव' का अर्थ है अनेक प्रकार की ध्वनियाँ। यह पद इस बात का प्रतीक है कि भारत में भले ही विभिन्न भाषाएँ, बोलियाँ, पंथ और संस्कृतियाँ विद्यमान हैं, परंतु जब वे राष्ट्र वंदना करती हैं, तो सभी दिशाओं से एक ही सुर और एक ही उदार राष्ट्रीय चेतना गूँज उठती है।

4. निराला जी ने इस रचना में बेहद उत्कृष्ट और सार्थक सांस्कृतिक व भौगोलिक प्रतीकों का उपयोग किया है। मुख्य प्रतीक इस प्रकार हैं: हिमालय को 'शुभ्र मुकुट' के रूप में दिखाया गया है जो देश के सर्वोच्च गौरव और संप्रभुता का प्रतीक है। गंगा नदी की धारा को 'गले के हार' का प्रतीक बनाया गया है, जो देश की निरंतर बहने वाली पवित्रता और वैचारिक निर्मलता को दर्शाती है। 'कनक-शस्य' और 'कमल' समृद्धि, प्रचुरता और लक्ष्मी-सरस्वती के संयुक्त वैभव के प्रतीक हैं। 'तरु-तृण-वन-लता' को 'वसन' (वस्त्र) माना गया है, जो भारत की अटूट पर्यावरणीय संपन्नता का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त 'प्रणव ओंकार' भारत की सनातन आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक है। ये सभी प्रतीक मिलकर भारत की महानता को पूर्ण करते हैं।

(छ) समानार्थी शब्द

1. कनक – सोना, स्वर्ण
2. शस्य – फसल, अन्न
3. शुचि – पवित्र, निर्मल
4. उर्मी – लहर, तरंग
5. हिम – बर्फ, तुषार
6. सुमन – फूल, पुष्प

(छ) तुकांत शब्द

1. करे – धरे, भरे
2. पदतल – शतदल
3. वसन – सुमन
4. तुषार – ओंकार, उदार

(ज) समास

1. कनक-शस्य → स्वर्ण के समान शस्य → कर्मधारय
2. चरण-युगल → दो चरणों का समूह → द्वंद्व
3. हिम-तुषार → हिम और तुषार → द्वंद्व
4. तरु-तृण → तरु और तृण → द्वंद्व
5. शतमुख → सौ मुख वाला → बहुव्रीहि

(झ) विशेषण-विशेष्य

1. शुभ्र हिम → विशेषण: शुभ्र, विशेष्य: हिम
2. धवल धार → विशेषण: धवल, विशेष्य: धार

(ञ) अलंकार

1. कनक-शस्य-कमलधरे → रूपक
2. गर्जितोर्मि सागर-जल → अनुप्रास
3. धोता शुचि चरण युगल → मानवीकरण
4. प्राण प्रणव ओंकार → अनुप्रास

(ट) संधि-विच्छेद

1. ज्योतिर्जल → ज्योतिः + जल
2. चरणयुगल → चरण + युगल
3. शतमुख → शत + मुख
4. गर्जितोर्मि → गर्जित + उर्मि